चलती है (और चलनी भी चाहिए), उसका व्यवस्थाओं से सम्बन्ध है, न कि विचारों से। उसका सन्दर्भ विचारों से, मतलब, जीवनशैलियों से कम है। देशों के आपस के सम्बन्ध कैसे रहेंगे, एक दूसरे के पूरक कैसे रहेंगे, इसका चिन्तन है। इसकी आवश्यकता भी है। परन्तु इसे संयुक्त राष्ट्रसंघ कहते हैं तो यह समस्या है, misnomer है। 'राष्ट्र' शब्द की संकल्पना न होने के कारण यह नामकरण ही गलत है। लेकिन इस गलत परिभाषा को आगे बढ़ाया जा रहा है। क्योंकि इस भाव की संकल्पना ही नहीं है कहीं और।

सिर्फ और सिर्फ भारतीय चिन्तन में ही हम तीन भिन्न संकल्पनाओं को समझ सकते हैं-देश, राज्य और राष्ट्र। अंग्रेजी में इनमें कोई विशेष अंतर नहीं है। लेकिन भारतीय चिन्तन में इन तीनों संकल्पनाओं में भिन्नताएं हैं।

देश

किसी भी समूह के लिए एक भूमि की आवश्यकता है। उस भूमि को हम देश कह सकते हैं। ये देश है। चारों ओर की सीमाओं से बंधा हुआ है, एक जमीन का टुकडा, जहां पर लोग रहते हैं, एक 'देश' है।

राज्य

उस भूमि पर सब प्रकार से शासन की सुविधाएं और व्यवस्थाओं को खड़ा करने की प्रक्रिया को 'राज्य' कहा गया है।

परन्तु एक भूमि के टुकड़े पर की गयी व्यवस्थाओं मात्र के आधार पर क्या मनुष्य का जीवन चल सकता है?

राष्ट्र

मनुष्य की अन्य अपेक्षाएं भी रहती हैं। मान सम्मान की भावनाएं होती हैं। समाज के समूहों के सम्मान के विषय भी होते हैं। क्रिकेट में भारत की जीत या किसी भारतीय को नोबेल पुरस्कार मिलने से व्यक्ति विशेष नहीं, बल्कि पूरे राष्ट्र को सम्मान का अनुभव होता है। एक राष्ट्र का गौरव, राष्ट्र का सम्मान, यह है राष्ट्र की परिकल्पना।

हम राष्ट्र की परिकल्पना एक शरीर के रूप में कर सकते हैं। शरीर में सब प्रकार के अवयव हैं। उसमें इंद्रियां हैं। उनके संयुक्त रूप को देश का स्वरूप समझें। उस शरीर की आवश्यकता है खाना-पीना, कपड़े, सुरक्षित रहने